Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 4, July-Aug – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 30/07/2020 Accepted on : 15/08/2020 Publication Date: 31/08/2020

शाब्दिक विश्लेषण का उपयोग कर शर्म की भावनाओं को समझना।

शिवानी
एम. ए. मनोविज्ञान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, इंडिया
Email - paylashivani@gmail.com

सार: अध्ययन का उद्देश्य टेक्सुअल विश्लेषण का उपयोग करके शर्म की भावनाओं को समझना था। अध्ययन के उद्देश्य से मैंने कृष्ण सोबती द्वारा लिखित एक उपन्यास "मित्रो मरजानी" लिया। यहाँ सबसे पहले पुस्तक का सारांश लिखा, फिर उन्हें छोटे-छोटे भागों में विभाजित किया, जिनमें पाठ से शर्म की भावनाओं को निकाला। उसके बाद अन्य भावनाओं की तलाश की जो वहां थी। इसके अलावा, एक चरित्र का चयन किया है जिसके अनुसार शर्म की भावना को समझने की कोशिश की गई है। मैंने भी खुद को उसकी जगह पर रखने और उसकी भावनाओं को समझने की कोशिश की। इस पुस्तक में बहुत से शर्म और अपराध के विभिन्न रंगों को दिखाया गया है। इस नावेल में मैंने देखा है, कैसे शर्म क्रोध, मौन, चिड़चिड़ेपन और गर्व का रूप ले सकता है। इसके अलावा आने वाले समय में इसके बाकी पात्रों को मुख्य बाना कर उनकी भावनाएं भी समझी जा सकती है तथा उनका नजरिया देखा जा सकता है।

मुख्य शब्द : शर्म, गिलानी, टेक्सुअल विश्लेषण, भावनाऐ, नावेल ।

पात्र:-
१, समित्रवंती:- मीत्रो,
२, गुरुदास :- मीत्रो का ससूर
३, धनवंती:- मीत्रो की सास
४, बनवारी :- मीत्रो का जेठ
५, सुहागवंती:- मीत्रो की जेठानी
६, सरदारी लाल :- मीत्रो का पति
७, गुलजारी :- मीत्रो का देवर
८, फूलवन्ती:- मीत्रो की देवरानी
९, बालो :- मीत्रो की माँ

१ प्रस्तावना:

शरमः

शरमः अपने आप या किसी अन्य के द्वारा की गई बेईमानी, हास्यास्पद, आदि की चेतना से उत्पन्न होने वाली दर्दनाक भावना है।

शर्म की शुरूआत में मनोवैज्ञानिक क्षति को दर्शाता है जो विकास में बाधा उत्पन्न करता है; दोषी महसूस करने की क्षमता उस मनोवैज्ञानिक वृद्धि पर निर्भर करती है और इसे भावनात्मक प्रगति के रूप में देखा जा सकता है यदि प्रारंभिक माहौल "अच्छा होता है," तो हम स्वयं मे एक विश्वसनीय समझ विकसित करते हैं जिससे बदले में हम अन्य लोगों को अलग-अलग देखने और उनके लिए चिंता महसूस करने में सक्षम होते हैं। यद्यपि अपराध का अनुभव दर्दनाक है, यह समझने की हमारी क्षमता है कि हमारे अपने कार्यों ने किसी को चोट पहुंचाई है, उस व्यक्ति के दर्द के साथ सहानुभूति के लिए और भावनात्मक स्वास्थ्य के सभी लक्षण होने के कारण पछतावा महसूस किया हो सकता है।

आत्म जागरूकता वाली भावनाएं :

आत्म-जागरूक भावनाएं, जैसे अपराध, शर्मिंदगी, शर्मिंदगी और गर्व, ये भावनाएं हैं जो हमारी स्वयं की भावना से संबंधित हैं और जो हमारे लिए दूसरों की प्रतिक्रियाओं से संबंधित हैं। जीवन के दूसरे वर्ष के दौरान, जब बच्चों को ये समझ आता है कि वे स्वयं अन्य लोगों से अलग हैं तब उनके मन में नई भावनाएं उभरने लगती हैं और फिर वो स्वयं की भावना विकसित करना शुरू करते हैं। इन भावनाओं में शामिल हैं: (1)
शर्म की बात है
गौरव
अपराध
शर्मिंदगी

स्वयं के प्रति जागरूक भावनाओं को सामाजिक लाभ प्राप्त करने के लिए दिखाया गया है इसमें सामाजिक व्यवहारों को मजबूत करने और सामाजिक त्रुटियों के पुनर्निर्माण जैसे क्षेत्र शामिल हैं। यह भी संभव शोध है कि यह सुझाव दे रहा है कि आत्म-सचेत भावना की कमी खराब व्यवहार का योगदान है। उनके पास पांच विशिष्ट विशेषताएं हैं जो उन्हें अन्य भावनाओं से अलग करते हैं जोकि, इस प्रकार है,

१,आत्म-जागरूकता और स्वयं प्रतिनिधित्व की आवश्यकता है
२,बुनियादी भावनाओं की तुलना में बाद में उभरना
३,जटिल सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति की सुविधा
४,सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त चेहरे का भाव नहीं है
५,संज्ञानात्मक जटिल

स्वयं के प्रति जागरूक भावनाओं को विकसित करने के लिए भावनाओं के उत्तरार्ध में शामिल हैं।

१, शारीरिक भाषाएडिट

ऐसी भावनाएं जैसे आनन्द, डर और उदासी सभी को सिर्फ एक व्यक्ति के चेहरे पर निर्भर किया जा सकता है हालांकि आत्म-जागरूक भावनाओं को शरीर के अतिरिक्त चेहरे (डार्विन, 1965) के अतिरिक्त शामिल है इसका मतलब यह है कि जब मनुष्य भावनाओं को सीखने का प्रयास कर रहे हैं, तो उनकी भावनाओं को समझना कठिन होता है।

२, स्वयं-जागरूकता संपादित

इन भावनाओं की प्रकृति के कारण, वे केवल एक बार एक व्यक्ति के रूप में अपने स्वयं के कार्यों का स्व-मूल्यांकन करने की क्षमता के रूप में प्रारम्भ करना शुरू कर सकते हैं।

२ मुख्य प्रकार:

शरम

शोधकर्ताओं के अनुसार हेडमन एट अल (2013), शर्म की दो वर्गीकरण हैं; आंतरिक व बाह्य। अंदरूनी शर्म की ओर आंतरिक रूप से ध्यान केंद्रित है और यह दर्शाता है कि कैसे व्यक्तिगत न्यायाधीश और उसे समझता है, जबकि बाहरी शर्म एक व्यक्ति की आशंका से होती है और दूसरों के नकारात्मक फैसले की भी अपेक्षा (हेडन एट अल।, 2013)। आंतरिक और बाहरी शर्म अक्सर एक साथ अनुभवी हैं उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति समझ लेता है वह स्वयं / दोषपूर्ण या अपर्याप्त है, वे यह मानना चाहते हैं कि उन्हें इस तरह से देखा जाता है, अन्य लोग के द्वारा।

गिलानी :

अपराध की भावना अक्सर घटनाओं से होती है जिसमें एक व्यक्ति अपने व्यवहार को मानता है,व्यक्तिगत नैतिक आचरण या सामाजिक मानदंड को तोड़ने के लिए व्यक्तिगत रूप से व्यक्तिगत रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है।

गर्व :

गर्व ब्रैंडन (1994) द्वारा एक व्यक्ति की संतुष्टि के अनुभव के आधार पर आधारित है कार्यों पर और प्राप्त की उपलब्धियां गौरव को शर्म की भावना के रूप में परिभाषित किया गया है (शेपार्ड और राबिनोविट्ज, 2013)। शर्म की बात है और अपराध के साथ, गर्व एक मजबूत आत्म-सचेत भावना है जो सामाजिक आचरण और मनोवैज्ञानिक कल्याण (ऑर्थ, रॉबिन्स एंड सोतो, 2010) में योगदान देता है। हालांकि, शर्म और अपराध नकारात्मक रूप में देखा जाता है, अभिमान को सकारात्मक भावना के रूप में वर्णित किया गया है (ऑर्थ एट अल।, 2010)। (2)

गुणात्मक अनुसंधान :

गुणात्मक अनुसंधान कई अलग शैक्षणिक विषयों में विनियोजित, पारंपरिक रूप से सामाजिक विज्ञान, साथ ही बाज़ार अनुसंधान और अन्य संदर्भों में जांच की एक विधि है। गुणात्मक शोधकर्ताओं का उद्देश्य मानवीय व्यवहार और ऐसे व्यवहार को शासित करने वाले कारणों को गहराई से समझना है। गुणात्मक विधि निर्णय के न केवल *क्या, कहां, कब* की छानबीन करती है, बल्कि *क्यों* और *कैसे* को खोजती है।

और कयोंकि हमारा उद्देश्य यहा पर हर बात के पीछे का कारण समझना था, उसके लिए हमे गुणात्मक विधी का प्रयोग करना पडा। हमने यहा पर, गुणात्मक विधी का प्रयोग इसलिए किया, ताकि हम उपन्यास को उसकी जड से समझ सके। और कयोकि गुणात्मक विधी हमे पाठ को समझने मे मदद करता है तो इसलिए हमने गुणात्मक विधी का प्रयोग किया। कभी कभी ऐसा भी होता है कि जो बात हम बोलते हैं उसके पीछे बहुत कुछ छिपा होता है तो उनही छिपे हुए रहस्यों को जानने के लिए हमें उपन्यास को गुणात्मक विधी का इसतेमाल करते हुए पठना पडा। (3)

शाब्दिक विश्लेषण :

पाठत्मक विश्लेषण विधि संचार शोधकर्ताओं का वर्णन और व्याख्या करने के लिए उपयोग होता है, एक रिकॉर्ड या दृश्य संदेश की विशेषताओं (4)

1. पाठ्य विश्लेषण का उद्देश्य है सामग्री, संरचना, और कार्यों का वर्णन ग्रंथों में निहित संदेश
2. शाब्दिक विश्लेषण में महत्वपूर्ण विचारों में शामिल होने के लिए ग्रंथों के प्रकार को चुनना शामिल है अध्ययन, उचित ग्रंथों को प्राप्त करना, और जो रोजगार के लिए विशेष दृष्टिकोण का निर्धारण करते हैं।
3. ग्रंथों की दो सामान्य श्रेणियां हैं:

क) संचार के प्रतिलेख (शब्दावली रिकॉर्डिंग)

ख) संचार के उत्पादन (संचारकों द्वारा निर्मित संदेश)

4. ग्रंथ प्राप्त करने के संदर्भ में, संचार के उत्पादन अधिक आसानी से उपलब्ध हैं टेप।

क) अभिलेखीय संचार अनुसंधान में शामिल एम्बेडेड संचार की जांच करना शामिल है मानव व्यवहार के मौजूदा अभिलेख अभिलेखागार में रखा गया।

ख) ग्रंथों का अधिग्रहण महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये चयनित पाठों की प्रस्तुतीकरण है नमुना आमतौर पर प्रयोग किया जाता है।

ग) एक और मुद्दा आचरण करने के लिए ग्रंथों को पूर्ण और सटीक कैसे निर्धारित करता है

पाठ के विश्लेषण का उद्देश्य, सामग्री, संरचना और कार्यों का वर्णन करना है और गरंथों में निहित संदेशका वणरन करना है।

३ सारांश :

प्रस्तुत कहानी की सुरवात में वर्षा होने के कारण गुरुदास की नींद खण्डित हो जाती है। और जब वह भीतर आता है तो बाह बढ़ा चस्मा उठा कर कमरे की पहचान करने लगते है। सोच ही रहे थे कि तनिक दुपहरी मे सो ही तो लिया कि इतने मे ही मसूड़ो की पीर से बेबस हो फिर लेट गए। एवम, अपने बचपन को याद करने लगे कि , अभी तो दूध के दांत निकले थे और आज एक झटके से उखड़ गए। और अपनी अम्मा की कहि बातें याद आ गयी कि "बेटा दांत गिरे-पीछे जीभा से न छूना"। और अपने माँ बाप को याद करने लगे , और सोचने लगे कि घर मे भी किसी ने बापू को याद नही किया , धनवंती चौके- चूल्हे मे लगी रही , बहुए कन्नी- काट अपने-अपने काम मे रुझी रहीं और लड़की उससे अपने बापू की नही तो अपने बापू के बाप की क्या फिकर। गुरुदास फिर उठे और आवाजारी से घरवाली को आवाज दी – बनवारी की माँ !, तो वो काम छोड़ आकर पूछा क्या पीर थोड़ी कम हुई? थोड़ा गर्म दूध लाउ , धनी ने गुस्से से कहा उसके बिना मरा नही जा रहा हुं। तब , धन्वन्ती ने कहा मर इतना कह तो माँ लो जवाब में कुछ न सुन वो दूध लेने आई। दूध गरम कर ही रही थी कि छोटी बहू आ खड़ी हुई बोली दूध जमा रही हो तो सजरी जाग देना कल का दही खट्टा था। धनवंती ने बिन जवाब दिए दूध का गिलास उठा कर कहा तुम्हारे बापू के लिए है। फिर चलते चलते मन में सोचा की घर के मालिक के थोड़े से दूध पे भी ऐसी निग़ाह। फिर दूध लेजा धनी को दिया , फिर दोनो ही अपने माँ बापू की यादों मे ऐसे दुबे की लगा दो भाई बहन मां बाप को याद कर रो रहे है।

इतने गुरुदास कुछ कहने ही वाले थे कि मंझली बहुं के कमरे से आवाजे आने लगी जा कर देखा तो सरदारी मीत्रो पर हाथ उठा कर बोल रहा था आँखे नीची कर, पर मीत्रो भी अपनी हट पे आँखे नीची नही कर रही थी। तो धनवंती ने पहले मंझली बहुं को कहा बेटी इसे तो जिद चढ़ि है तू ही चुप हो जा। लेकिन बहु और सिना ताने खड़ी हो गयी सास ने फिर मन्त की बेटी मेरा बस चले तो इस नालायक बेटे के माथे न लगूँ। बहु की आंखों मे और चमक आ गयी और बोली मां जी बेटे के लिए अपना तन ना सुखाओ इसकी करनी आप ही इसे काले पनिया भिजवांऊगी ।

बेटे ने फिर बाह पकड़ ली और कह पहले तो तुझे उस पार पोचाऊंगा ना, फिर मां ने बड़े बेटे को आवाज लगाई, तो बनवारी ने पहले एक नज़र भउजाई को देखा फिर सुहाग को कहा की मंझली को अंदर ले जाओ और खुद भाई के कमरे में गया। फिर मामला थोड़ा शांत हुआ तो बनवारी ने सरदारी से कहा मने भी दो दो बहाई है पर कभी ऐसी नोबत नही आई। यह सुन सरदारी ने जवाब दिया, कहा क्या बताऊँ भाऊ इसके यह चलन.....और अपनी बीबी की तुलना जात कमजात से करी और कहा ये इस घर का नाम ले डूबेगी।

जब धनवंती गुरुदास के पास आकर बैठी तो सुहागवंती को पास देख पुछा सब ठीक तो है न बेटी, तो उसने बताया कि बनवारी ने मुझे बाहर कर मीत्रो को अंदर बुलाया है। धनवनती बहु की तारीफ ही कर रही थी कि बहु ने आके बताया कि अंदर से मँझली के हसने की आवाज आती है माँ। इतना सुन उसने बहु का हाथ छोड धनी को उठाया और जाकर देखा की मँझली बहू चारपाई पर बैठे नंगे सर हस रही हैं और बड़ा लड़का छाती पर हाथ रखे दांत पिसता है। यह देख सरदारी जब मीत्रो पर हाथ उठाने गया तो बनवारी ने बीच में ही रोक दिया , गुरुदास गुस्से से बोले तेरे बेटे को तो बाद मे देखता हूं पर तेरी ये बहूं नंगे सर इन जल्लादों के बीच बैठी क्या कर रही है।

बड़े बेटे ने मां को कहा कुछ न बुलवाना इससे मां वरना बापू नही सुन पाएंगे, धनवंती ने कहा ऐसा क्या है, जो वो न सुन पाएंगे । फिर सुहाग ने मां बापू को समंझाया और बहार ले आयी, अंदर जाकर मीत्रो को कहा क्यों लड़ती हो देवर जो कहता है मान लो न। जवाब सुन बनवारी से ना रहा गया और भाई को साथ लेकर कहा सुहाग इससे अपने कमरे मे ही सुला ले हम अलग सो जाएंगे और भाई के साथ दूसरे कमरे में जा सोया।

फिर रात को सोते समय , मीत्रो ने कपड़े अलग फेक कर कहा बनवारी कहता है कि मीत्रो तेरा बदन सीसे का सा है, यह देख सुहागवंती से न रहा गया बोली मुझे पाप न चढ़ा । लेकिन मीत्रो भी कहा बाज आने वालों में से थी उससे और परेसान करने लगी। पूरी रात ये सब चलता रहा तो सुहाग ने गुस्से में आकर कहा जल्दी कपड़े पहन वरना मेरे से बुरा कोई नहीं होगा।

मीत्रो झिझकी नही और कहा सात नदियो की तारू, तवे सी काली मेरी माँ मैं गोरी उनकी कोख में कहा से पड़ी कहती है इलाके के बड़भागी तहसीलदार की मुहिद्ररा है मीत्रो।सुहाग ने फिर उसे समंझाया की बहू बेटियों के लिए तो घर ग्रहस्थी की रीति ही लक्ष्मण की लकीर होती है। फिर मीत्रो आँखे बंद कर ख़ुद को बोला चिंता छोड़ जिस घड़ दुनिया का सुख लूटने को भेजा है वही जहान का वाली तरी फिक्र भी करेगा।फिर आंखे बंद कर बनारसी का यार दिख गया तो रजाई परे जा गिरी सुहाग ने कहा ये ख्याली पुलाओ बनाने छोड़ो।मीत्रो ने आँखे खोली तो सांस को पास खड़े देखा तो आँखे मटकाके कहा मुंह अंधेरे यहा कैसे माँ जी ? धनवंती कुछ देर उसके मुंह को देख कर बोली बेटी मेरे जैसी करमजली के ऐसे भाग कहा, और चौके से सुहाग की आवाज़ सुन उठ बैठी और बोली लाख लानत है मुझे जिसने तुम्हारी माँ से माथा लगाया।

सुहाग ने आकर कहा जल्दी जल्दी नहा आओ छोटी का जी अच्छा नही है हम काम कर लेते है। इतना सुन मीत्रो ने कहा वो हमेशा ही बेमार रहती है स्वांग रचती है वो। सुहाग ने कहा नही वो आज सच में बेमार है लेकिन मीत्रो ने नही माना। फिर नहा धो आयी तो सुहाग पराठे सेक रही थी और सास लड़के के साथ बापू के कमरे में कोई खिचडी पक्का रही थी। फिर देवरानी के कमरे में गयी तो देखा की उसकी बेहोशी टूट चुकी है तो ताना मारे बिना चुप नही रही। दोनो में लड़ाई होने लगी , यह देख धनवंती ने अंदर आ दोनो को चुप कराया और फूलवन्ती को कहा वो तेरी जेठानी है तो तू ही चुप हो जा। तो फुला सास पे ही भड़क पड़ी । और अपने पति से बोली अब तो खुद ही देख लो तुम्हारी माँ और भउजाई कैसे मुझे परेसान करती रहती है। मेने आज तक बड़ा सब्र रखा पर कान खोल सुन लो अपनी सिंगार पट्टी न छोडूंगी। इन सब के बाद बेटे का रुख देख कर धनवंती कच्ची हो आयी। गुस्सा संभाल बोली बेटी बनवारी की पहली बहु की पाऊँचीया तेरी वरी में ढोई थी, फिर तेरी सिंगार पट्टी को देकर मेने कोन जुल्म कर दिया। दोनो को लड़ता देख मीत्रो हस पड़ी और बोली लाडो तू बी कम ना है। धनवंती का मन भर आया सदा जिसे डाडती फटकारती रहती हूं उसी ने आज सास का साथ तो दिया। फिर सुरु हो गयी सुहाग जो दूर से सब देख रही थी आके सासु को वहा से ले गयी। सास को जेठानी के साथ जाते देख फिर फूला ने ताना मारा तो सुहाग ने उसके दहेज का सामान लेकर उसे दे दिया तो फूला ने अपने लिढे भी मांगे तो मीत्रो से रहा न गया और बीच में आकर कहा दीदी तुम्हे मेरी कसम अगर ये इसे देवे तो और फुला पर अंगारे बरसाए । जब मीत्रो अपने कमरे म आयी तो अपने पति को सोता देख उसकी दुखती हडियॉ पर हाथ फेरा दबाया और फिर आयने के सामने जा खड़ी हो गयी और बोली मेरा मर्द ये भी नई जनता कि मुझ सी दरियाई नार किसी गुर से काबू आती है। इतनी ही देर में सुहाग आके बोलती है, मीत्रो बहन तनिक चौकस हो जाओ तुम्हे बापू ने बुलाया है। मीत्रो ने कहा कि ठीक है में किसी से नही डरती। सुहाग ने आराम से कहा देख बहन सब बहुत गुस्से में है अगर कुछ बोले तो आराम से सुन लेंना कुछ कहना नही। फिर दोबारा शिशा देखा और कहा चल मेरे जेठ की टेरन अब हो जाये पेशी अपने बुढ़ऊ से।

जब सब आ गए तो गुरुदास ने सबसे पहले धनवंती की और देखा फिर बनवारी की ओर सिर हिला बोले- न लो इस बूढ़े का इम्तिहान इस बड़ी उम्र में मैं बुडा मुझे छूटी दो इन सब से। पहले चुप रह फिर हिमत कर बोला सरदारी को अपनी पत्नी से कोई बेर नही जो उस पर झूटी तोहमत लगाएगा। फिर जब उसने मीत्रो बहू की और ताका तो वो उसे छोटे से घुघट वाली कोई छोटी गुड़िया लगी। सरदारी ने कुछ कहने की कोसिस की तो धनी ने रोक के कहा मैं कोई अंधा नही हुं जो देख नही पाऊंगा। जब बड़े बेटे ने बापू को आराम करने को कहा तो धनवंती को थोड़ा आराम मिला कि चलो घर का बड़ा तो घर की इज्जत को रख रहा है, फिर मीत्रो से कहा कि तुम ही बोल दो जो भी सरदारी ने देखा सुना वो गलत है।

मीत्रो घुघट में से देख इतराती रही । फिर जब उसके पति ने कुछ जवाब नही दिया भाई के पूछने पर तो उसने घुघट ऊपर कर कहा ये सच भी है और झूठ भी। ये सुन कर सब हैरान हो गए और बनवारी ने सिर झुका लिया। सिर हिला हिला सास ने बहु को सुनाया , तो सुहागवंती ने दांत तले जबान ले ली और बोली गम खाने को तो मीत्रो दूसरी बार जन्मेगी। तो मीत्रो ने कहा तू तो मुझे सिखा कर लायी थी अब बता क्या करूँ सुहाग ने कान में कहा अभी सुनवाई होने दे कल बोलना। फिर जब बनवारी ने कहा ये कैसा जवाब की सच भी और झूठ भी, तो मीत्रो ने कहा सच तो यू जेट जी कि दीन- दुनिया बिसरा मैं मनुक्ख की जात से हस-खेल लेती हूं, और झूठ यू कि खसम छोड़ मैं कोठे पर तो ना जा बैठी।

यह सुन गुरुदास उठा और अपने बेटों को डाटने लगा, बोला तील का ताड बना तरीमत के मुँह लगते हो। इस सब से गुस्से में आकर सरदारी चीखकर बोला तू छिनालो की भी छिनाल! आज न माने पर एक दिन इसके यार और याराने,,,, ये सुन वो ससुर से बोली सुना बापू कोई माँ जाई ये सब कैसे सुनेगी। ससुर की आखों में धूल झोंक वो बहूत खुस हुई। फिर वो अपने ससुर की सेवा मे लग गयी और ससुर से तारीफ सुन बहार आई। फिर गुरुदास अपनीी बेटी के बारे मे सोचने लगा कि इतने में धनवंती आई और बोली बेटी की चीठी आयी है। वो अपनी बेटी को याद कर खुश ही हो रहा था कि धनवंती बोली कि बनवारी बड़ी समस्या में है मंडी का देना ४-६ दिन में न चुकाया तो ,,,

जब बनवारी घर लोटा तो सुहाग को सरदारी को बुलाने के लिए भेजा जब वह ना मिला तो मीत्रो से कहा, वो दिन ढलने से पहले आ जाये तो बताना । जाते जाते फुला का कमरा देखा तो उसे छेड़ने जा पौंची दोनो में फिर लड़ाई होने लगी, फिर सास के पास बैठी और फूलवंती को ताना मारने लगी तो धनवंती जो पहले से ही उससे फुकी बैठी थी, बोलने लगी मैं तो किसी के गहने ले ही नही रही बस घर की सुख शांति को सोचती हूं। फिर सास और फुला में तू तू होने लगी , सास की कच्ची होते देख मीत्रो का दिल

पिघल गया। फिर सरदारी आया और माँ को बोला कि सरदारी ने जो गुल खिलाये है उनकी देंन है । और बोला कि उसके पास जो पैसे आते थे वो उन्हें आगे भेजता ही नही था जिसकी वजह से हमे इतना नुकसान हुआ। इतने मैं ही फूलो सर पीट पीट के रोने लगी बोली इस घर मे तो हमं किसी को सुहाते ही नही और जा कर अपने कमरे मे खुद को बंद कर लिया।

फिर मित्रों सरदारी के लिए खाना ले गयी और उसका ध्यान खींचने के लिए कुछ न कुछ करती लेकिन सरदारी जो कि परेसान था उसने ध्यान नही दिया। फिर उसने कहा मेरा पति ही मुझे नही देखता तो सरदारी ने उसे बताया कि कर्ज की वजह से वो परेसान है तो मीत्रो ने कहा कि अपने साहब के लिए इतना ना कर सकी तो मित्रों न हुई कि कनगली हुई। तो फिर पूछा कितने चाहिये , मीत्रो ने उसे उतने पैसे दे दिए। फिर सरदारी ने उसे कुछ देर देखा फिर पूछा तुम्हारे पास ये पैसे कहा से आये? उसने अपनी कसम दी लेकिन मीत्रो ने उसकी कसम खाने से मना कर दिया और बोली कि ये पसे मैंने जमा कर के रखे हुए है। कोई गलत काम से नही आये है।

तभी जनको घर आती है सब से मिलती झूलती है और मीत्रो अपनी सास के साथ मिल के उससे छेड़ती है। हंसी मजाक चलता रहा और फिर मीत्रो ने फूला को बोला बहुत हुआ गुस्सा अब बहार आ जाओ और फिर देवर के साथ फूलो के बाई को देख मीत्रो खुश हुई और फूलो को बुलाया। फिर उसके भाई आ गए और मीत्रो ने सब कबट्टा मीठा ला कर रखा फिर फूला बहार आयी फ़टे बेकार कपड़े पहनकर। उसके भाई ये देख कर गुस्से से बोले किसने की हमारी बहन की ये हालत । धनवंती ने एक ही पल में सब भाप लिया और बोली मैं तुमसे नही अपने बेटे से बात करुँगी। बोली साफ साफ कह गुलजारी तू इन सरकारों को किस मतलब से लाया है। फिर फूलो बोली हमारी यह इतनी बुरी हालत हो और हम कुछ न कहे फर गुलजारी ने कुछ बोलने के प्रयत्न किया लेकिन बोल न सका। तो माँ ने थोड़ा हौंसला बढ़ाया लेकिन उसने सर और नीचा कर लिया।

यह देख माँ ने कुछ न कहां और उन्हें जाने दिया। अपने घर पहुंच के फुला को ऐसा लगा मानो नया जन्म लिया हो जैसे ही फुला की माँ ने उससे पूछा क्यो री अब अच्छा लग रहा है। माँ तुम्हारा जमाई तो अच्छा है गणेश है लेकिन लड़ाई की वजह तो कुछ और ही थी, मा ने पूछा सास ने आते टाइम ड्रामा किया होगा तो जवाब दिया अपने घर वालो की करतूत तो ये भी जानते है । फिर सबके बारे मे पूछा और उसकी दोनो भाभी आपस में इशारे कर कर के सब समंझ रही थी । और बोली जिसने गलत किया होगा ना माजी उसे तो उसकी करनी का फल जरूर मिलेगा। फिर दोनों ने कहा कि आप अपने जेवर वही छोड़ आए कुछ तो समंझ की होती । तो फूलो की मां ने जवाब दिया हमारी बेटी सही सलामत आ गयी है वही बहूत है मेरे लिए।

धनवंती जब एक सुबह उठ के आयी तो एक मीठी खबर सुन सब चिंता दूर हो गयी, उसने सुमित्रा को दहलीज़ पे खड़े खड़े पूछा आज नई की जगह तुम्हे देखती हूं। जेठानी तुम्हारी राजी तो है? तो जवाब दिया माजी तुम्हारी लाडली घर से क्या गयी तुमने तो घर बाहर की चौकसी ही छोड़ दी। तो पूछा कहि तरी जेठानी बेमार तो नही । मीत्रो ने बताया कि वह तो पेट से है अब दादी को बेटा पैदा कर लाएगी। यह सुन वो बहुत खुश हुई और जैसे ही धनी को ये खबर देने चली मीत्रो मन ही मन हस पड़ी बोली "जिन्द- जान का ये कैसा व्यपार? अपने लड़के बीज डाले तो पूण्य, दूजे डालें तो कुकर्म।

अपनी सास को खुश देख कर बोली मां क्या भगवान को धन्यवाद दे रही हो असली पैगम्बर तो तुम्हारे बेटे है जब चाहें पोदे रोप दे। फिर मीत्रो की देह देख कर बोली बेटा तू पतली क्यो हुए जा री है। बहु चुप रही और ये देख उसने फिर पूछा बहू! , उसने फिर कुछ न कहा देख धनवंती सोच में पड़ गयी जो हमेशा इतनी हस्ती बोलती रहती है आज चुप क्यों हो गयी। पूछा फिर से लड़ाई हुई है क्या मैं जानती हूं सारा दोष इस लड़के का ही होगा छोटी छोटी बातों पे लड़ मरता है ये। सुन कर मीत्रो ने सर उठा के बोला जले पे नमक छिड़कने से कुछ नही होगा अम्मा! माँ-बेटे मिल छिल छाल मेरा आचार क्यु नही डाल लेते।

सुन सास परेसान होकर बोली मुंह पर कालिख पोतने को एक ही कम थी क्या दूसरी भी खड़ी हुई,फिर समंझा भुझा के बोला बेटी ये ऐसा ही है भगवान करे कि तेरी कोख़ भी जल्दी ही भर जाए। सुन कर मीत्रो बोली अम्मा! तुम्हारे इस बेटे के यहां अगर कुछ हुआ तो मैं चुहड़ी के पाव धो धो के पीयूंगी। वह कुछ न बोली और सोच में दुब गयी, और तभी जाके सुहाग के गले लग गयी । उसे लगा कि अम्मा फुला और गुलजारी के बारे में सोच री है और उन्हें उलाहना देने लगी , फिर धनवंती ने इसे बताया।

धनवंती ने अपने बड़े बेटे को बुलाया और कहा बेटा जा जाके सोने के कंगन बनवा ला। और फिर बोला मेरी बहूं तो लाखों में एक है और उसकी और अपने लड़के की तारीफ की । फिर कहा की कंगन तो सरदारी की बहू के लिए बनवाने है । और अपने बेटे को बताया बेटा इस लड़की का पार किसी ने न पाया उस दिन सगुन की खबर मुझे दे बहुत खुश थी फिर अचानक जाने क्या हुआ भड़क पड़ी । अच्छी हो तो अच्छे से अच्छी लेकिन बुरी हो तो बुरो से बुरी। रुक रुक कहा तुम्हारे भाई को गाली निकालती है इसलिए तुमसे पूछती हुं तुम्हारा भाई संग – सेहत में तो पूरा है न। उसने बिना आँखे मिलाये कहा उसमे कोई दोष नही है। फिर बोला सच झूट तो पता नही पर इसकी बहु के ढंग कुछ ठीक नही है। और सब कुछ बताया कि निहाले को जानती हो भरी मंडी में बोलता है कि भउजाई के पास बैठे तो बोलना की मैं याद कर रहा था। फिर बोला उसकी वजह से इस घर की कोई इज्जत नही रही।

धनवंती मीत्रो के कमरे में जाती है अंदर से ही सत्कार करते हुए मीत्रो बोली मीत्रो न हुई कि कोई घर की काम करने वाली मोतियों की झालर हो गईं। तब तक धनवंती ने नजाने क्या क्या सोचा सरदारी आज घर नही कहि और ही तो मुह नही मार रहा है। फिर अपनी बहू से प्यार करते हुए कहा कि तुम्हारे लिए कंगन बनवाये है बनवारी को भेजा है और तुम कुछ दिन अपने घर घूम आओ। और मेरी मान कर महीना दो महीनों ये व्रत कर लो , इस बीच यहा की मैं सम्भाल लुंगी।

मीत्रो को जैसे बिना मांगे मन की मुराद पूरी हो गई हो, बोली एक दो क्या मैं तो इनके लिए चौबीस पक्ख व्रती रह लूँगी।

फुला के पीहर में , गुलजारी बिना किसी को प्रणाम किये सिदा ऊपर चला गया सब एक दूसरे को देखते रहे, फिर मयवंती ने अपनी बेटी से कहा देख ली न अनोखी अदा अपने पति की। फिर भाई की बीवी की बाते सुन गुस्से से लाल हो कर ऊपर गयी और अपने पति को ताने देने लगी कि जरूर अपनी माँ के पास से होकर आए होंगे फिर उसकी माँ ऊपर आयी और अपनी बेटी को डांट के बोला वो अभी थक कर आया है और तू उसके सर चढ़ गई। फिर बोली वो अपनी माँ से मिलके आया होगा। गुलजारी कुछ कहता इतने में ही उसकी पत्नी बेहोश हो गयी वो फिर भी नही उठा। भाई के आने पे मां ने कहा बेटा इसे बाद में देखना अपनी बहन को देखो पहले। और जब मुह पर पानी डाला और पिलाया तो थोड़ी आँखे खोली फिर मुंद ली , और बेहोसी में ही कहने लगी मुझे किसी का श्राप है मेरा साई ही मुझसे मुह फेरे हुए है। इतना सब हुआ लेकिन वो नही उठा, फिर मौका देख बहु अंदर आयी और बोली मांन गयी जमाई मुझे पता था एक दिन तुम इन माँ बेटी के चंगुल से बाहर निकल ही जाओगे।

इधर मीत्रो के पीहर जाने की तैयारिया हो री थी उसके लिए नया जोड़ा निकलवाया और बनवारी भी नए कंगन ले आया, और खुसी खुसी वो अपने पीहर के लिए तैयार हुई। फिर जेठानी उसको छेड़ने लगी , फिर दोनों में हसी मजाक चलता रहा फिर बात बात में मीत्रो ने फिर उल्टा बोला तो सुहाग ने समंझाया की हमारा देवर देवता समान है उसके साथ ऐसा न कर री और उससे बहुत समझाया। फिर मीत्रो निकल गयी अपने घर के लिए।

रात में धनवंती ने दूध लेजाकर सुहाग को दिया तो उसने कहा मुझे ही बुला लिया होता फिर दोनों में बाते हुई और सास ने बताया कि मीत्रो उसके देवर को गालियां देती रहती थी और दोनों में सारी बाते हुई । फिर पूछा बेटा भी तक लोटा नही तो उसने बोला पहली बार वह गया है न तो समधन ने रोक लिया होगा। फिर सास ने पूछा तुमने देवरानी को एक दो साल देखा परखा है सच सच कहना ये दुनिया जो उसके बारे मे अनाब सनाब बकती है वो सुच है क्या? पता नही मां क्योकि ये एक समय सफेद तो दूसरे समय स्याह। उसके मन में क्या है वही जाने। फर जब सास जाने लगी तो पीछे से बुला बोला हम कौन होते हैं किसी को नाप तौल करने वाले वैसे भी। यह देख धनवानी खुश हुई और सोचा ऐसी बहूं पाकर मैं धन्य हो गयी।

फिर बाहर आ अपने बेटे को छेड़ने लगी बेटा उठ कर भीतर चला गया।और अपने बेटे को ऐसे देखने लगी जैसे कोई राजकुमार हो, फिर दोनों पति पत्नी बैठ कर बातें करने लगे फिर अचानक से उसका ध्यान गुलजारी पे जा पहुंचा गुरुदास ये समंझ गए और उसका ध्यान भटकाने लगे क्योकि अगर एक बार वो वहा पौची तो फिर किसी की नही सुनेगी और परेसान हो जाएगी।

वहा जब मीत्रो अपने पति के साथ घर पहुची तो सब मीत्रो को देख बहुत खुश हुए और सरदारी ये सब देख रहा था ।और मीत्रो छुपे छुपे हस्ते हुए अपने पति के साथ घर पहुची। अपनी बेटो को देख बाला बहुत खुश हुई और उसका मुंह चूमा। फिर उसने दोनो को खाना खिलाया । फिर उसने मीत्रो से उसके पति के साथ खाना खाने को कहा और दोनों की बाते सुन सुन कर सरदारी को बहुत अजीब लगा की ये कैसी बाते कर रही है दोनो एक दूसरे को छेड़ रही थी।

फिर उसके बाद दोनों में बाते होने लगी माँ ने बेटी को कहा तू तो मुझे ऊपर से नीचे तक प्यासी नज़र आ रही है। दोनो मे बाते हुई बोली अगर आपके जमाई को पता चला न तो मेरी तो खैर नही होगी अम्मा। उसने कहा वो तू मझपे छोड़ बस जा जाकर कपड़े पहन के आ । फिर मीत्रो प्याजी रंग की ओढनी पहन पति के पास गई तो उसे लगा कोई बरसे की हूर है फिर उसके साथ सरारत की बोली मुझे नही पहचान पाए फिर उससे भर भर के सराब पीला दी और जब वो बेहोश होकर सो गया तो माँ के पास आई। फिर बाला लड़की को लेकर बाहर आई और पाहुन घर की पेडियो तले पहुची तो मीत्रो के पैर ऐसे पड़े की बसन्ती बयार हल्के पात फड़फड़ाए हो। पर जैसे पाओ बढ़ाया तो बोली अगर वो उठ गया तो मरी खेर नई बालो ने कहा में हुं ना कुछ नही होगा और जैसे ही वो ऊपर गयी बालो के दिल मे सुहागा चला गया। और मीत्रो को नीचे बुलाया , वो नीचे आयी और पूछा सब ठीक तो है, बालो रोती रही। फिर मीत्रो समंझ गयी और बोली जब उससे इतना ही प्यार है तो मुझे ऊपर क्यों भेजा, उसने कहा न न मीत्रो अब मेरा कोई वारिस ये ना करेगा।

अचानक मीत्रो को जाने क्या हुआ की उसको डर लगने लगा घर में काला काला सा दिखने लगा। और जब उसने बालो की तरफ देखा तो उसे उसमे चील की आँखे देखी और उससे दूर झटक के कहा वाह री वाह अब तू अपने इस काम मे मेरी और मेरे पति की भट्टी जलाने चली है। फिर जाके अपने पति के बगल में सो गई । सुबह जब उसका पति उठा तो उसने अपने पति के मुह पर चमन किया और जब पति ने पूछा कि मना ली रंगरेलियां तो उसने कहा नही रात तो न कही पाव पड़ा, बस बैठ हवा के घोड़े बांटे कहा की कहा निकली।

मीत्रो ने घरवाले की छाती में मुँह छुपा लिया- मेरे हरमन मोल ! यही किस्सा बीता तुम्हारी मीत्रो के साथ! फिर बाहो से अंगड़ाई ली, हाथो को चटखा मुरका उठ बैठा । अपने पति के हाथ दबाये , पाव दबाये, सर हथेली ओठो से लगा झूठ मूठ का थूक कर बोली – कही मेरे साहिब जी को नज़र न लग जाये इस मीत्रो मरजानी की।

४ साहित्य की समीक्षा:

प्रवचन में शर्म और गुस्से को पहचानना (एस. एम. रेटजींगर) वाक्पटु ग्रंथों और उपन्यासों में भावनाओं के लिए साक्ष्य जो विवरण में समृद्ध हैं (जैसे कि गोएथे के [1786... शब्द और इशारे-जो नहीं कहा गया था लेकिन निहित है) का विश्लेषण भावनाओं की पहचान करने के लिए किया जाता है, साथ ही... बहुत, घन मौखिक शब्दों के प्रत्यक्ष उपयोग शामिल हैं। यह शर्म की बात है। (5)

५ सामग्री:

मीत्रो मरजानी उपन्यास (कृष्ण सोबती)
चुना हुआ चरित्र : मैने मित्रों के चरित्र को चुना क्योंकि मुझे वो मुख्य पात्र लगी, और वो सबके साथ एक जैसा व्यवहार करती है। और क्योंकि मुझे मित्रो को सुनकर लगभग ऐसा लगा है कि वह अपने घर में एक दुर्व्यवहार है जिसमें उसने शादी की है।

६ विधि:

यहा पाठ्यचर्या विश्लेषण का इस्तेमाल किया गया है। पाठ विश्लेषण "सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में क्रांतिकारी है। स्वचालित पाठ विश्लेषण सामाजिक वैज्ञानिकों ने बड़ी संख्या में राजनीतिक दस्तावेजों की सामग्री का तेजी से अध्ययन करने के लिए कम्प्यूटेशनल विधियों का उपयोग करने का मौका प्रदान किया है। मनुष्य रोजाना अरबों शब्दों को अपने सामाजिक जीवन और राजनीति के बारे में लिखते हैं। सोशल मीडिया पोस्ट में राय, सरकारें बैठकों के मिनट और कानून के पाठ को रिकॉर्ड करती हैं, और समाचार पत्र दैनिक प्रकाशनों में राजनीतिक घटनाओं का विवरण देते हैं। और, इससे विश्लेषकों को दस्तावेजों की सामग्री का सारांश करने के लिए सांख्यिकी का उपयोग करने की अनुमति मिलती है, गणना के मिनटों में पढ़ने के वर्षों के संघनक।

इसी के साथ, पाठ विश्लेषण को पढ़ने में सहायता के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है: यह उन दस्तावेज़ों का चयन कर सकता है जो महत्वपूर्ण, प्रतिनिधि या प्रभावशाली ग्रंथों पर सामाजिक वैज्ञानिकों को ध्यान में रखते हुए, अधिक विस्तार से पढ़े जाने चाहिए।

प्रस्तुत दस्तावेज के उद्देश्य पूरती हेतु, मैंने मित्रों मरजानी उपन्यास का चुनाव किया। उसके पश्चात चयनित उपन्यास का गदयांस लिखा फिर, उसके बाद, उपन्यास मे से विषय निकले और फिर मैंने उपन्यास में से शरम और गिलानी वाले विषय निकाले और उसके पश्चात, मैंने कुछ और विषय जो मुझे दिखाई दिए वो निकाले ।

फिर मैंने अपनी भावनाओ को पात्र की भावनाओं से मिलाया इसके पश्चात हमने पाठय विशलेषण किया। जिसमें हमने चयनित विषयों को रेखांकित किया एव उन्हें विस्तारित किया।

७ विचार-विमर्श:

प्रस्तुत दस्तावेज का उद्देश्य पाठ्य विश्लेषण की मदद से शर्म की अवधारणा को समझना था। जिसके उद्देश्य पूरती के लिए हमने एक उपन्यास को चुना, तथा उसमे से शर्म के विषय छाटे। तो इस पूरी प्रक्रिया में मैने शर्म की बहुत-सी परछाई देखी। जैसे कि बहुत सी जगह शर्म ने क्रोध का आवरण ओठा था तो कही पर शांति का। मेरे लिए शर्म एक दर्दनाक, सामाजिक भावना है जिसके परिणामस्वरूप "... स्वयं के मानकों के साथ स्वयं की कार्रवाई की तुलना में ..." देखा जा सकता है। लेकिन जो समान रूप से आदर्श सामाजिक संदर्भ के मानक के साथ स्वयं होने की स्थिति की तुलना करने से समान हो सकता है इस प्रकार, शर्म की बात आशंकात्मक कार्रवाई या केवल आत्मसम्मान से हो सकती है; शर्मिंदा होने की कोई कार्रवाई आवश्यक नहीं है: बस मौजूदा पर्याप्त है दोनों तुलना और मानकों को समाजीकरण द्वारा सक्षम किया गया है। हालांकि आम तौर पर एक भावना माना जाता है, शर्म की बात भी भिन्नता, अनुभूति, राज्य या स्थिति के रूप में माना जा सकता है।

जैसे कि, उपन्यास में बहुत सी जगह शर्मिंदगी महसूस करने के डर से शर्म की भावनाओं ने क्रोध का आवरण ओठ लिया था, जैसे कि, जब, सब बापू के कक्ष मे थे तब जब सरदारी को सब बताने को कहा तो वह कुत न बता सका और शरमंदगी के कारण नीचे देखने लगा। यहा वो अपनी पत्नी मित्रो की हरकतों पर शरमिन्दा था। और मित्रो ने भी यहा बढे तरीके से सरदारी को शरमंदगी महसूस कराने के लिए कहा, कि मैं खसम का दिया राज पाट छोड़ कोठे पर तो न जा बैठी। यह सुन सबको बहुत शरमंदगी महसूस हूई, और धनी की शरमंदगी ने करोध को जनम दिया और उसने गुस्से में आ कर सरदारी को डाटा ताकि वह अपनी बीवी को समझे। तो यहा पर मुझे शरम और गिलानी की छाया दिखाई दि, जैसे कि, यहा पर गुस्सा शरम से आ रहा था। और जैसे, की जून प्राइस टैंग्नी, जेफ स्टुविग, और डेबरा जे माहेके ने नैतिक भावनाओं और नैतिक व्यवहार पर एक शोध किया है जिसमें उन्होंने यह बताया है कि, जब परिस्थितिया हमारे अनुकूल नहीं होती, तब शर्मंदगी की भावनाए क्रोध का रुप ले लेती हैं।

और कयोकि मित्रो का शर्मंदगी महसूस करने का अलग ठंग है तो इससे मुझे लगता है कि मित्रो का शर्मंदगी की भावनाओं को वयकत करने का तरीका अलग था। वह या तो उसे घमंड मे ले जाती थी या फिर शरमा कर इतरा देती थी। तो इसका कारण यह भी हो सकता हैं कि कयोकि वह एसी जगह से आई थी जहा उससे कभी नहीं बताया गया कि शर्मंदगी कया होती है। कयो लोग इन भावनाओं को महसूस करते हैं। तो सायद मित्रो का यह अलहड वयवहार का कारण यह भी हो सकता था।

कई बार इसमे ताना मार मार के भी सामने वाले को गिलानी महसूस कराने की कौसिसे की गई है। जैसे की , जब फुला सबसे छोटी बहु बीमारियों का बहाना बना कर काम से बचाव किया करती थी तो मित्रो उसे गिलानी महसूस कराने के लिए उसे ताना मारा करती थी, ताकि वो कभी शरमंदगी महसूस कर के कुछ काम करा दे जोकि कभी होता नहीं था। यही नही बल्कि वह अपने देवर को भी ताना मारती थी कि काश वो अपनी पत्नी की चालो को समझ ले और देखे कि कौन सच्चा और कौन छुठा है। तो इस प्रकार से यहा ताना मार के भी एक दूसरे को शरमंदगी महसूस कराने की कौसिसे की गई है। जो कि मुझे लगता है कि एसा इसलिए किया गया होगा कयोकि एसा करने से हम सिधा सामने वाले के आतमसमान को ठेस पहुचाते है जिससे वह इस ताने को सुनकर खडा हो जाए और कुछ करे जैसे मित्रो बार बार अपनी देवरानी को ताना मारा करती थी।

इसके साथ साथ। हम एसा तब भी करते हैं जब हम किसी को इसारा करना चाहे कि वह गलत रासते पर जा रहा है। या फिर जब हम किसी को सावधान करना चाहे कि वह गलत इनसान पर भरोसा कर रहा है। जैसे कि इस उपन्यास मे मित्रो ने किया। वह अपने देवर को ताना मारती थी, जब वह अपनी पत्नी की बात मे आता था।

और इसके सिवा, मुझे बहुत से अन्य चिजे भी दिखी, जैसे कि, चिडचिडापन और झिललाना जो कि सुहाग को महसूस हो रहा था जब मित्रो बेबाक सी अपने कपडे उतार कर सुहाग को देखने के लिए कह रही थी, उस समय सुहाग चिडचिडापन महसूस कर रही थी थी। जो कि कही न कही शरमंदगी महसूस करने के डर से आ रही थी और उसे पाप चढने के डर से.लग रहा था। और इसमे मित्रो कभी कभी संभोग के लिए फिसल जाती थी और उसे अपनी सारिरक इचछाओ को पूरा करने का मन होता था। इसलिए वह अपने सपनो मे उनहें पूरा करने की कोसिस करती थी। तो इससे मुझे लगा कि वो शरम महसूस करती थी, पर कयोकि वो उनहें सिधा सिधा नही दिखा सकती इसलिए वह चिढचिढा वयवहार करती थी।

इसके अलावा मुझे लगता है कि उपन्यास में लजा एवं खुसी दिखाई गयी है, जैसे, जब जनको घर आई तो पूरा घर खुसी से खिल उठा । और फिर, एक दुसरे की टांग खिचना सुरु हो गया। और जब मित्रो ने जनको को छेडा तो वो लजा से पानी पानी हो गयी। जब, मित्रो ने जनको के पति को लेकर मजाक किया तो जनको को बहुत लजा आ रही थी। इसके, अलावा भी जब मित्रो अपने मायके जा रही थी तब सुहाग के छेढने पर मित्रो ने रिझ के दिखाया और लजा दिखाते हुए चल पडी।

और मित्रो के व्यवहार मे. मुझे गर्व की भावनाएँ दिखी, क्योंकि मुझे लगा कि उसे अपनी शिशे सी निरी गोरी देह पर गर्व है। उसे लगता है कि वह बहुत सुंदर है और उससे ज्यादा सुनदर कोई नही है। और उसे लगता है कि जैसा व्यवहार वो करती है वह सही है। और सायद ये लोग फालतू का सोचते है। उसके हिसाब से सबको खुल कर जिना चाहिए और पूरा मजा लेना चाहिए।

और इसमें मुझे दिखा कि फूला ने अपने आप को बेचारा दिखाया। तो मुझे लगता है कि इसमे खुद को छोटा और दुखी दिखाने की भी कोसिस करी गई है जैसे कि जब फूला के भाई आए थे तो वो फटे हुए कपडे पहन कर और एकदम बेचारो वाला रुप बना कर बहार आई । और अपने भाईयों को ऐसे दिखाया कि वो यहां बहुत बुरी हालत में है और ताकि वो उससे यहा से ले जाए। और इसलिए मुझे लगा कि यहा पर खुद को बेचारा दिखाने की कोसिस की गई है। यही कुछ और भावनाए थी जो मुझे दिखाई दी थी।

संस्कृति

यह उपन्यास हिन्दू संस्कृति के हरयाणवी क्षेत्र पर आधारित है। कयोंकि इस उपन्यास मे इस्तेमाल की गई भाषा हरयाणवी है। जैसे कि, इसकी करनी आप ही इसे काले पानिया भिजवायेगी, बीबो जैसे शबद, नूरमहलन , निरा शिशा, आदि जैसे शबदो का परयोग किया गया है। और पूरा उपन्यास हरयाणवी भाषा में लिखा गया है। जिससे हम यह कह सकते है कि यह हरियाणा की संस्कृति को दरसा रहा है।

और सुहाग एक ऐसा चरित्र था जो, एक पूरी रुढिवादी हिन्दू बहू के रुप में दरसायी गई है। और मित्रो एकदम उसके उलटे रूप में दिखाई गई है। इस उपन्यास में दिखाया गया है कि कैसे मित्रो अपनी संस्कृति को ध्यान मे न रखते हुए बरताव करती है। और वह अपनी संस्कृति के लोगों से एकदम भिन्न है और विरक्त है।

अगर मुझे यह उपन्यास मित्रों के स्थान पर खडा होकर देखना पडे तो शायद मै वही दद महसुस कर पाऊ जो मित्रो बरदाश्त कर रही अगर मैं उसके दृष्टिकोण से उपन्यास देखती हूं, तो मुझे लगता है, जैसे ही मित्रो ने प्रतिक्रिया व्यक्त की है, उसी तरह मैं भी प्रतिक्रिया देती। मुझे लगता है कि अगर मैं उसकी स्थिति पर होती तो मैं उन स्थितियो को संभालने में सक्षम नहीं रहती और चुप हो कर पूरी स्थिति को झेलती क्योंकि मुझे लगता है कि मै मित्रों जितना मजबूत नहीं हु। उसने जिस प्रकार सारी समस्याओं को झेलते हुए भी अपने पती कि मदद की वो सायद मैं नही कर पाती।

मुझे लगता है कि मित्रों के परिप्रेक्ष्य के अनुसार, उसका पति फट्टू था और उन्हें नहीं पता कि लड़की को कैसे खुश करना है और वह यह भी नहीं जानता कि महिलाओं का सम्मान कैसे करना है। वह नहीं जानते कि कैसे एक पत्नी का इलाज करें और उसने यह भी महसूस किया कि उसका पति अपने काम से व्यस्त है और व्यस्त है। इसलिए, उस समय वह बहुत बुरा महसूस कर रही थी और इन सभी हताशा और क्रोध से वह बहुत परेशान तरीके से व्यवहार करते थे और अपने गुस्से को अन्य परिवार के सदस्यों पर किसी को भी कहते हैं। और उसके कारण हो सकता है कि वह अपने पति के लिए सभी बुरी चीजें बोलती है।

और मुझे लगता है कि अगर यह उपन्यास मित्रों के दृष्टिकोण से देखी जाए तो अपने मन की बाते बताने मे कोई बुराई नहीं, बल्कि उसके अनुसार हमें जैसा भी महसूस हो वह हमें व्यस्त कर देना चाहिए। और उसके अनुसार अगर यह उपन्यास लिखा जाता तो शायद हमें यहाँ इतने सारे मतभेद देखने को नहीं मिल पाते। मित्रो के हिसाब से उसकी देवरानी नौटंकी थी, आए दिन कोई ना कोई बीमारी का बहाना बनाकर काम से बचती रहती थी। और उसकी सास और जेठानी दोनो लाज शरम के बारे मे बहुत सोचती है।

मित्रो के हिसाब से उसके पती का एसा व्यवहार बहुत ही फालतू का था। और उसके हिसाब से उसे यह सब बरदाश्त करने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

८ विश्लेषण:

शर्म की भावना:

१, उद्धरण :- , *"पराई लडकी पर हाथ , सरदारी लाल ? मेरे लिए डुब मरना अच्छा"।*

प्रसंग:- सरदारी अपनी बीवी मित्रो पर हाथ उठा रहा था। तब धनवंती ने सरदारी को शरमिंदगी महसूस कराने की कोसिस की।

बहाना:- यहा पर, मुझे लगा कि शर्म की भावनाए सिधा सामने न आकर क्रोध का आवरण ओढ कर सामने आई है। और इसी ने मुझे आकृषित किया की मै यहा पर शर्म की भिन्न छायाओ को समझू।

पहलू :-. यहां पर धनवंती को गुस्सा आया था जोकि घर की इज्ज़त खराब होने के डर से उनहे आया था। इसलिए यहा पर वो अपने लडके को शरमंदगी महसूस कराना चाहती थी। ताकि घर मे ज्यादा शोर न हो और घर की इज्जत बनी रहे। तो यहा पर शरम के डर ने गुस्से का रुप ले लिया।

२, उद्धरण:- *यह कूडा मेरे भाग था। इससे तो अच्छा कोई चुहड़ी चमारिन अच्छी थी।*

प्रसंग:- धनवंती अपने बेटे को समझा रही थी, लेकिन सरदारी अपनी पत्नी से तंग आ चूका था। और उसकी करतूतों से बहूत परेशान था। इसलिए उसने एसे सबदो का प्रयोग किया।

बहाना:- कयोकि मैं इस उपन्यास में शर्म की भावनाओ को समझना चहाती थी। और उसकी भिन्न भिन्न परछाइयों को जानना चहाती थी। तो सायद इसलिए इस प्रसंग ने मेरा ध्यान केन्द्रित किया।

पहलू:-. मुझे लगता है कि, सरदारी लाल का गुस्सा भी कही न कही घर की इज्जत खराब न होने के डर से ही आ रहा था, जैसे कि उसने कहा कि यह कूडा मेरे भाग था। इससे तो अच्छा कोई चुहड़ी चमारिन अच्छी थी। इससे यह पता चलता है कि सरदारी को घर की इज्जत का डर है जिसने गुस्से का आवरण ओढ लिया था। और यहा पर ही घनवंती को डर था तो इसलिए उसने अपने बैठे को गिलानी महसूस कराने के लिए कहा, छिः छिः! ताकि वो कुछ तो शरम करें।

३ उद्धरण :- *मरी माँ का मुह देखे अगर चुप न हुआ तो।*

प्रसंग:- धनवंती का डर गुस्से में बदल गया और उसने बेटे को चुप करने के लिए थभकी दी।

बहाना:-. एक बार फिर से यहां पर गुस्सा शरमदगी महसूस करने के डर से आ रहा है।

पहलू:- यहा मुझे लगा कि, धनवंती को घर की इज्ज़त बेकार होने का डर लगता है, और कयोंकि समाज को घर की कोई बात पता चली तो लोग बाते करते है उलटा सिधा बोलते हैं। तो इसलिए सायद, धनवंती का डर गुस्से में बदल गया और उसने बेटे को चुप करने के लिए थभकी दी कि मरी माँ का मुह देखे अगर चुप न हुआ तो। यहा पर गुस्सा शरमदगी महसूस करने के डर से आ रहा है।

४, उद्धरण :- *सरदारी से पुछ ले कि पूरी बात क्या है ये रोज रोज के ट्टने अच्छे नही.....नौबत नही आई।*

प्रसंग:- यहा पर, घर मे बखेड़ा खडा हूआ था। जहा मित्रो के बारे मे बात करी जा रही थी। सरदारी मित्रो के चाल चलन की बूराई कर रहा था।

बहाना:- यहा पर, मुझे सरदारी का वयवहार समझ आया मुझे यह देखने को मिला कि, सरदारी मित्रो के बारे मे कैसे विचार रखता है। इसी लालसा ने यहा मेरा धयान आकृशित किया।

पहलू:- जब धनवंती ने बनवारी से कहा कि सरदारी से पुछ ले कि पूरी बात क्या है ये रोज रोज के ट्टने अच्छे नही। तब, सरदारी को शरमंदगी हुई, और जिसके कारण वह अपना सर ऊपर न उठा पाया। उसे बात बताने मे बहुत झिझक हो रही थी। लेकिन जब उसके भाई ने ताना मारा कि उसने भी दो दो बयाही है पर एसी नोबत कभी नही आई तब सरदारी की शरम ने गुस्से और चिरचिराहट की ओढणी ओढ ली और उसने कहा, कया बताऊ भाई इसके मिरासियों से ये चलन..... किंतु शरमंदगी के कारण आगे न बोल सका।

जिससे पता चलता है कि वह अपनी पत्नी की करतूतों पर शर्मंदगी महसूस कर रहा है। और उसे वयकत भी नहीं कर पा रहा है।

५, उद्धरण:- सरदारी ने अपनी..... पानियों भिजवायेगी।

प्रसंग:- यहा सरदारी ने अपने मन की बात सबको बता दी, और थोडा सांत महसूस किया।

बहाना:- यहा पर, सरदारी के मन की बात सबके सामने वयक्त हो रही है। और उसका चरित्र सबके सामने ऊभर कर आ रहा है।

पहलू :- फिर, जब उसने कहा, कि एक दिन यह नूरमहलन इस घर का नाम-धाम सब ले डुबेगी या मुझे ही काले पानिया भिजवायेगी। यहा सरदारी ने अपने मन की बात सबको बता दी, और थोडा सांत महसूस किया। पर यहा, मुझे लगा कि सरदारी अपनी पतनी की हरकतों से बहुत परेशान हैं और उसके कारण उसे शरमंदगी भी महसूस होती है किंतु वह इसे सबके सामने व्यक्त नही कर पाता जिसके कारण वह उसके अंदर ही अंदर उबलती रहती है और कभी कभी गुस्से के माध्यम से बाहर आती है। अथात्, सरदारी लाल की शरमंदगी की भावनाए गुस्से के माध्यम से बाहर निकलती हैं।

६, उद्धरण:- धनवंती अनदर आई.....मेरे धनी पर।

प्रसंग:- यहा धनवंती अकेले बैठे सब कुछ सोचने लगी। और मन ही मन गोते खा रही थी।

बहाना:-- यहा पर सही मायनों मे धनवंती के मन की भावनाए खूल कर वयकत की गई हैं और इसी चीज ने मेरा धयान आकृशित किया है।

पहलू:- यहा दुख की भावनाए शर्मंदगी को महसूस करने के डर से आ रही है। जैसे कि, धनवंती जब धनी के पास बैठी थी तो सोचने लगी की इस देह का कया है ये आज है कल नहीं। पीछे चिल्लाती झीललाती यह गृहस्थी छोड़ जाएगी, जहान हँसेगा मुझपे और मेरे

देवता से धनी पर। यहा पर धनवंती को डर है की कही समाज के लोग उन के ऊपर हँसेंगे और उनके परिवार के सदसयो के बारे मे उलटा बोलेंगे और फिर उन्हें इसके कारण शरमंदगी महसूस करनी न पड जाए। तो यहां पे शरमंदगी महसूस करने के डर से दुखी हैं। अथात् यहा दुख आ रहा है शरमंदगी महसूस करने के डर से।
७,उद्धरण:- धनवंती ने.....:..... लोक मरजाद।
प्रसंग:- जब, धनवंती ने घर की इज्जत को बचाने के लिए धनी की बाँहें थाम ली थी तब, धनी ने सर हिला हिला कर कहा था कि यह कलयुग है कलयुग!।
बहाना:- यहा पर भी एक बार फिर से शरम ने गुस्से और चिडचिडाने का रुप ले लिया था। जिसने एक बार फिर मुझे उससे समझने के लिए प्रेरित किया।
पहलू:- जब, धनवंती ने घर की इज्जत को बचाने के लिए धनी की बाँहें थाम ली थी तब, धनी ने सर हिला हिला कर कहा था कि यह कलयुग है कलयुग! अथात् यहा पर भी एक बार फिर से शरम ने गुस्से और चिडचिडाने का रुप ले लिया था।

यही नही बल्कि बहुत जगह पर शरमंदगी और गिलानी ने कई बार गुस्से की चादर ओढी है। उदाहरण के लिए, जब सुहाग और मित्रो एक ही कमरे में थे और मित्रो बुरे शबद बोल रही थी तब सुहाग को शरम आ रही थी और वो ये सब नही सुन पा रही थी तो उसने क्रोध मे मित्रो को चुप होने को कहा।
८,. उद्धरण :- एकाएक.....कहती हू।
प्रसंग:-.. जब मित्रो और सुहाग दोनो एक कक्ष मे थे, और मित्रो अपने आप को बडा एवं अपनी सूंदरता की तारीफ करना चहाती है।
बहाना:--. यहा शर्म को गर्व के रुप मे दिखाया गया है। और इसी ने मेरा धयान आकृशित किया कि किस प्रकार यहा पर मित्रो ने शर्मंदगी महसुस करने से बचने के लिए गर्व का आवरण ओढा।
पहलू:- यहा पर शरम और गिलानी ने स्वाभिमान का रुप भी लिया है, जैसे कि जब मित्रो कहती है कि मेरी देह निरा शिशा है, तो वहा मुझे लगता है कि उसे कही न कही गिलानी महसूस होती है जो कि वह वयक्त नही कर पाती और वह इतनी बढ गई हैं कि अब उसे इस चिज मे गरव महसूस होता अथात् कही न कही उसने उन भावनाओं को इतना दबा दिया कि वो अब खुल कर जिने लगी है और यहा तक की अब उसे कोई शरमंदगी भी महसूस नहीं होती।
९,. उद्धरण:- मित्रो कुछ कहने..... एक नजर इधर भी।
प्रसंग:- यहा मित्रो अपनी तुलना जेठानी से करते हुए यह बताने की कोसिस करती है कि वो भी कुछ है ।
बहाना:- इस उद्धरण ने मेरा धयान इसलिए एकत्रित किया कयोकि यहा पर मुझे लगा कि शरम ने लजा का घूँघट भी ओढा है।
पहलू:- इस स्थान पे शरम ने लजा का घूँघट भी ओढा है, जैसे कि मित्रो को अदर ही अंदर खुद पर गिलानी थी कि वह अपनी जेठानी जैसी नही तो सायद इसलिए वह शरमा कहती है कि जेठ जी मैं अपनी जेठानी के समान तो न पर एक नजर मुझ पर भी डाल लो। तो यहा सायद उससे अपने ऊपर और अपनी करतूतों पर शर्मंदगी महसूस हो रही थी, जिसे उसने लजा मे बदल दिया।
यही नही बल्कि उसने बहुत सी जगह शरमा शरमा कर अपने पती को लुभाने की कौशिक की। और वह बहुत सी जगह ऐसा करती हुई दिखी तो मेरे हिसाब से वो सायद कही न कही इस बात पर शरमंदगी महसुस करती है कि वो अपने पती को अपनी तरफ आकृशित कयो नही कर पाती है।
१०, उद्धरण:- मँझली ने नयी.....चहकने लगी।
प्रसंग:- जब, गुरुदास ने सबको कमरे मे बुलाया समझाने और सुधारने के लिए तब मित्रो ने खुद को बचाने के लिए सिधा बनने का ढोंग किया।
बहाना:- यहा मेरा धयान इसलिए केंद्रित हुआ कयोंकि यहा मुझे मित्रों का नया रुप देखने को मिला और उससे और जानने का अवसर मिला।
पहलू:- मेरे हिसाब से जब, धनी ने सबको बुलाया समझाने के लिए तो वहा भी मित्रो ने शरमा कर अपने आप को गिलानी महसूस करने से बचाया। उसने एसा व्यवहार इसलिए किया ताकि उसे गिलानी महसूस करनी न पडे। और जब वो बापू के कमरे मे गई तो उसने लंबा सा घूँघट निकाल लिया और इतराती सी चहकने लगी। और वहा वो बिलकुल नई नवेली दुल्हन की तरह करने लगी और एक दम मासूम सी बन गई ताकि उसे गिलानी न महसूस करने को मिले और ताकि कोई उसे कुछ कहे भी नही।
११, उद्धरण:- फूलवंती के दरवाजे के आगे.....मंत्र मित्रो के पास।
प्रसंग:- यहा मित्रो अपनी देवरानी को छेड रही है और ताने मार रही है ताकि वह थोडी सरम करके काम करा दिया करे। और ये नाटक करने बंद करे।
बहाना:- कयोंकि यहा पर दूसरो को शर्मंदगी महसूस कराने की कौसिसे करी गई है। और यह कैसे किया गया है उससे जाने की लालसा ने मुझे आकृशित किया है।
पहलू:-यहा पर कई बार इसमे ताना मार मार के भी सामने वाले को गिलानी महसूस कराने की कौसिसे की गई है। जैसे की , जब फुला सबसे छोटी बहु बीमारियों का बहाना बना कर काम से बचाव किया करती थी तो मित्रो उसे गिलानी महसूस कराने के लिए उसे ताना मारा करती थी, ताकि वो कभी शरमंदगी महसूस कर के कुछ काम करा दे जोकि कभी होता नहीं था। यही नही बल्कि

वह अपने देवर को भी ताना मारती थी कि काश वो अपनी पत्नी की चालो को समझ ले और देखे कि कौन सच्चा और कौन छुठा है। तो इस प्रकार से यहा ताना मार के भी एक दूसरे को शरमंदगी महसूस कराने की कौसिसे की गई है।

यही नही बल्कि और भी बहुत से स्थानो पर ताना मार कर दूसरे को शर्म महसूस करने की कोसिस करी गई हैं। जैसे कि, फुला ने भी अपनी जेठानी सुहाग को ताना मारा ताकि वो शरम और गिलानी से भरके उसके मायके से आए गहने और बाकी के सभी सामान उसे दे दे। और यहा मित्रो ने भी फुला को ताना मारते हुए कहा शाबाश, देवरानी शाबाश, इस चिट्टे सिर वाली की तुमने अच्छी बात कही है, पर इतना जान ले देवरानी, मैं जो तेरे मर्द की माँ होती तो तेरे इस पिदके से सिर पर एक बाल न छोडती। यह सब उसने इसलिए कहा ताकि वह थोडी सरम करे और बडी को सारा सामान लोटाने को न कहे। तो इस प्रकार यहा तानो का इस्तेमाल किया गया है।

जब, सब बापू के कक्ष मे थे तब जब सरदारी को सब बताने को कहा तो वह कुछ न बता सका और शरमंदगी के कारण नीचे देखने लगा। यहा वो अपनी पत्नी मित्रो की हरकतों पर शरमिन्दा था। और मित्रो ने भी यहा बढे तरीके से सरदारी को शरमंदगी महसूस कराने के लिए कहा, कि मैं खसम का दिया राज पाट छोड़ कोठे पर तो न जा बैठी। यह सुन सबको बहुत शरमंदगी महसूस हूई, और धनी की शरमंदगी ने करोध को जनम दिया और उसने गुस्से में आ कर सरदारी को डाटा ताकि वह अपनी बीवी को समझे। तो यहा पर मुझे शरम और गिलानी की छाया दिखाई दि, जैसे कि, यहा पर गुस्सा और ताना दोनो शरम से आ रहे है।

१२, उद्धरण .सुनकर एक बार.....सुध लो।

प्रसंग:- यहा पर सरदारी को पैसो की जरुरत थी कयोकि उसे काम मे घाटा हो रहा था। तब मित्रो ने पैसे दे उसकी मदद करी।

बहाना:- यहा पर सरदारी ने पहली बार मित्रो के बारे मे अचछा सोचा उसे लगा मित्रो इतनी बूरी भी नही। तो यहा मित्रों का उसके पति के प्रति प्रम दिखा।

पहलू:- जब मित्रो ने अपने पती की मदद की जब उसे काम मे घाटा आ रहा था तब मित्रो ने जो पैसे अपने आगे के समय के लिए जोडें थे वो उसे दे दिए तब उसे अपने ऊपर गिलानी हुई कि बेसक इसके चाल चलन ठीक नहीं पर इसपर हाथ उठाना भी ठीक नहीं था, और उसे अपनी उस हरकत पर अफसोस हुआ कि उसने गलत किया है अपनी पत्नी के साथ।

१३, उद्धरण:- फूला ने तावली.....जनमा है।

प्रसंग:- यहा फूला घर वापस जाने के लिए अपनी बूरी दसा दिखा नाटक कर ऋही थी।

बहाना:- यहा पर शर्म ना महसूस करने के लिए बेचारी बने का ढोंग किया गया है जिससे मुझे यहा शर्म की एक और परछाई दिखी।

पहलू:- एक बार, जब फूला के भाई वहा पहुंचे और फूला ने उनके सामने मरी सी दुखियारा का सा ढोंग रचा तो जब माँ ने बैठे की ओर देखा तो उसने अपनी नजरे ऊपर नही उठाई सायद क्योंकि उसमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि वो अपनी माँ से नजरे मिला सके क्योंकि वो भी अपनी पत्नी की ही तरफ ले रहा था। और इसी की शरमंदगी के कारण उसमें अपनी माँ से नजरे मिलाने की हिम्मत नहीं रही होगी। और जब माँ ने कहा कि घर के मामलो मे बहार वाले लोग कयो आए हैं तो उसकी नजरे ओर नीची हो गई।

१४,. उद्धरण मित्रो ने सास.....भूखी हू।

प्रसंग:- यहा मित्रो अपनी सास से उसके बैठे के बारे मे कटू शबदों का प्रयोग कर रही है।

बहाना:- यहा पर मुझे लगा कि मित्रो के शबद सून सास को अपने बैठे की करनी पर शक होने लगा जिसके कारण वह शर्मंदगी महसूस कर रही है।

पहलू:- सायद धनवंती को जब मित्रो की बाते चुबने लगी तो उसे शरमंदगी महसूस होने लगी कि कही उसी के बैटे मे तो कौई कमी नही जो बहू आए दिन उसके लिए कुछ न कुछ बकती ही रहती है। और यह गिलानी की भावना तब ज्यादा बडी जब सुहाग की कोख मे भी बच्चा आ गया था, और मित्रो जिसे बेबाक कहा जाता था अचानक से चुप हो गई। तब इसी गिलानी के चलते धनवंती ने बनवानी से मित्रो के लिए कंगन लाने को कहा, और मित्रो को कुछ दिन उसके मायके भेजने को कहा।

और इसी के कारण उसे कुछ महीनों के लिए उपवास रखने को भी कहा। इसी के साथ उसे डर था कि जो सब मित्रो के बारे मे कहते है कही वो सच तो नही। तो यहा पर उसका डर घर की इज्जत के न चले जाने का था। यही नही पर उसको डर था कि अगर यह बात बहार गई तो क्या होगा घर की इज्जत उछल जाएगी। और बदनामी भी बहुत होगी। और जब उसको पता चला कि उसका बेटा देर रात तक घर नही आया तो उसे डर लगा की कहीं वो बहार गुल तो नही खिला बैठा। और इसी घर के कारण भी उसे शरमंदगी महसूस हो रही हैं।

इसी प्रकार बहूत से स्थानो पर यही कुछ विषय दूबारा से शर्मंदगी की भावनाओ को जनम दे रहे थे। जोकि कुछ इस प्रकार है।

जब, अंत मे गुलजारी को सब कुछ समझ आया तो उसे अपने किए पर बहुत पछतावा हूआ, और इस गिलानी ने चूपी का सहारा लिया। अथात् जब उसे सब कुछ समझ आया तो उसने किसी से कुछ न कहा और रात में देरी से आकर चूप चाप कमरे में जा कर लेट गया। और फिर अपनी पत्नी के बेहोशी के नाटक करने पर भी नहीं उठा। और यहा पर दुख गिलानी की वजह से आ रहा है।

जब, मित्रो अपने पति के साथ मायके पहूची तो लोगों ने बहूत सी बाते बोली जिन्हें सुनकर मित्रो को अपने ऊपर गोरव महसूस हुआ और वो सिना तान के चलने लगी, वही ये सारी बाते सुन कर सरदारी के कानो मे कीलें चुभने लगी। और उसका सर

शरम से और झुक गया था। वो जैसे जैसे आगे बढ़ रहे थे लोगों की बाते भी बढ रही थी। और सरदारी की गरदन शरम से ऐसे झूकी कि फिर पूरे रासते उठी ही नहीं।

और जब, वो लोग घर पहुंचे तो मित्रो और उसकी माँ की बातो को सुन कर उसके बदन परसूइया चुभने लगी। और सोचने लगा, "एक-दूजे को उखाड़ती- पछाडती ये कैसी माँ -बेटियां"। और सरम से पानी पानी हो गया। और जब, माँ ने बैटी को यही रुकने को कहा तो मित्रो को ना जाने कया हुआ और उसे अपनी करनी पर लज्जा आई और उसने अपनी माँ को कहा, "कयो री कयो?.तू सिद्ध भैरव की चैली , अब अपनी खाली कडाही मे मेरी और मेरे पति की मछली तलेगी? सो न होगा बीबो कह देती हूं ।"

फिर उसे अपनी सारी गलतियों का इहसास हूआ और उसकी शरम और गिलानी के कारण वो अपने पति के पास आ लेट गई। फिर जब सुबह सरदारी ने उसे उसका हाल पूछा तो उसने, अपने पति की छाती में मुह छुपा कर कहा "मेरे हरमन मौला! यही किससा बीता तुम्हारी मित्रो के साथ!"

और फिर इस गिलानी वाली जिंदगी से बहार निकल खुस हुईं।

शरमंदगी के अलावा मुझे यहा गिलानी एवं अपराध की भावनाएं भी दिखी जोकि कुछ इस प्रकार है,

मुझे गिलानी की भावना यहा पर दिखी, जब, गुरुदास ने अपने माता पिता को याद कर रहे थे। तब उन्हें अपने ऊपर शरमदगी महसूस कि न उन्होंने और न ही घर के किसी सदस्य ने उनहे याद किया। यह, मुझे इसलिए लगा.क्योंकि गुरुदास ने यहा, ऐसे शबदो का प्रयोग किया, कहा गये अपने माँ बापू ? सुरगो मे जिनका वास, ऐसे बापू को हाय, इस अभागे ने कभी याद ही नही किया। यहा पर गुरुदास जी का मन गिलानी से भरा हुआ था और मुझे लग कि वे कही ना कही अपने बारे मे सोच रहे थे। कि जब उन्होंने ही कभी अपने बापू को उनकी मृतयु के बाद याद नही किया, तो उनके बैठे जो जिते जी उनको नही पुछते वे उनकी मृतयु के पछताछ कया खाक उनहे याद करेगें। मेरे हिसाब से यहा पर जो गिलानी उनहे महसूस हो रही है वो कही ना कही इसी डर के कारण वश उनहे महसूस हुई। अथात् यहां पर, डर ने गिलानी की चादर ओढी हैं।

दूबारा गिलानी बनवारी मे देखने को मिली जब उसको काम मे नुकसान पहुंचा और उसकी माँ ने उसे धी रोटी खाने को पूछा तब अपने ऊपर गिलानी महसूस करने की वजह से वह कुछ खा नही पा रहा था, यहां पर वह दुखी था। यहा दुख गिलानी की भावनाओं से आ रहा था।

९ जाँच – परिणाम :

मित्रो और उसके परिवार के सदस्यों के शरम की भावनाओ को व्यक्त करने में अंतर:-

मित्रो पूरी कहानी मे कही भी शरम या गिलानी महसूस करती हुई नही दरसाई गयी है। उसे केवल अपने ऊपर घमंड एवं आतमविसवास करते हुए दिखाया गया है, जो कि मुझे लगता है कि उसे महसूस होती है किंतु वो बचचपन से ही ऐसे वातावरण में रही है, जिससे उसे अब न कोई शरम महसूस होती है। और उस वातावरण की वजह से सायद उसने उन भावनाओं को इतना दबा दिया कि अब उसे न हि शरम महसूस होती है और न ही गिलानी। मुझे लगता है कि, वो भावनाएं उसके अचेत मस्तिष्क में पहुंच चुकी थी जो कि अंत मे निकली थी जब उसे आभास हुआ कि वह अभी तक जिस दुनिया में रह रही थी वहां अंधकार के अलावा और कुछ नहीं है। तो इसलिए सायद उसे बेबाक और अलहढ कहा गया है। और उसको गिलानी महसूस होने वाले स्थानों पर गरव करते दिखाया गया है।

और उसके परिवार वाले इन भावनाओं को क्रोध के माध्यम से, दुखी होकर, या ताना मार कर दिखाते दरशाय गए है। परिवार के अन्य सदस्य जब मित्रो की बात सुन कर शरमंदगी महसूस करते थे तो वे उसपे चिला कर या किसी पर गुस्सा कर के निकालते थे। और बहुत से स्थानों पर वो खुद को गिलानी महसूस करने से बचाने के लिए भी गुस्सा करते दिखाये गए थे।

और मेरे लिए जब मुझे शरम या गिलानी महसूस होती है तो मैं वहा पर सांत रहती हूं और कुछ नहीं कह पाती। अगर किसी ओर से वो गिलानी की भावना आती है तो मै सांत रहती हूं और अगर मेरे कुछ अनुचित काम से वो आती है तो मैं ऐसे में मैं अकेले कमरे में रहकर पूरी बातो को याद करके ये जाने की कोसिस करती हूं कि मेने कहा कहा गलतियां की है और मैं वहा कैसा वयवहार कर सकती थी।

इसके सिवा, मुझे बहुत से अन्य चिजे भी दिखी, जैसे कि, चिडचिडापन और झिललाना जो कि सुहाग को महसूस हो रहा था जब मित्रो बेबाक सी अपने कपडे उतार कर सुहाग को देखने के लिए कह रही थी, उस समय सुहाग चिडचिडापन महसूस कर रही थी थी। जो कि कही न कही शरमंदगी महसूस करने के डर से आ रही थी और उसे पाप चढने के डर से.लग रहा था।

और इसमे मित्रो कभी कभी संभोग के लिए फिसल जाती थी और उसे अपनी सारिरक इचछाओ को पूरा करने का मन होता था। इसलिए वह अपने सपनो मे उनहें पूरा करने की कोसिस करती थी। तो इससे मुझे लगा कि वो शरम महसूस करती थी, पर कयोकि वो उनहें सिधा सिधा नही दिखा सकती इसलिए वह चिढचिढा वयवहार करती थी।

इसके अलावा मुझे लगता है कि उपन्यास में लजा एवं खुसी दिखाई गयी है, जैसे, जब जनको घर आई तो पूरा घर खुसी से खिल उठा । और फिर, एक दुसरे की टांग खिचना सुरु हो गया। और जब मित्रो ने जनको को छेडा तो वो लजा से पानी पानी हो गयी। जब, मित्रो ने जनको के पति को लेकर मजाक किया तो जनको को बहुत लजा आ रही थी। इसके, अलावा भी जब मित्रो अपने मायके जा रही थी तब सुहाग के छेढने पर मित्रो ने रिझ के दिखाया और लजा दिखाते हुए चल पडी।

और मित्रो के व्यवहार मे. मुझे गर्व की भावनाएँ दिखी, क्योंकि मुझे लगा कि उसे अपनी शिशे सी निरी गोरी देह पर गर्व है। उसे लगता है कि वह बहुत सुंदर है और उससे ज्यादा सुनदर कोई नही है। और उसे लगता है कि जैसा व्यवहार वो करती है वह सही है। और सायद ये लोग फालतू का सोचते है। उसके हिसाब से सबको खुल कर जिना चाहिए और पूरा मजा लेना चाहिए।आगे के लिए मैं यही कहना चाहूंगी कि यहां मित्रों के सर्वभाव को गर्व भी समझा जा सकता है तथा उस तहरा भी इसे आगे मापा जा सकता है।

और इसमें मुझे दिखा कि फूला ने अपने आप को बेचारा दिखाया। तो मुझे लगता है कि इसमे खुद को छोटा और दुखी दिखाने की भी कोसिस करी गई है जैसे कि जब फूला के भाई आए थे तो वो फटे हुए कपडे पहन कर और एकदम बेचारो वाला रुप बना कर बहार आई । और अपने भाईयों को ऐसे दिखाया कि वो यहां बहुत बुरी हालत में है और ताकि वो उससे यहा से ले जाए। और इसलिए मुझे लगा कि यहा पर खुद को बेचारा दिखाने की कोसिस की गई है। यही कुछ और भावनाए थी जो मुझे दिखाई दी थी।

परिणाम:

अतः मुझे प्रस्तुत पाठ मे शर्म की भावना बहुत से भावनाओं मे विलीन दिखाई दी।

१० निष्कर्ष:

अंत मे मेरे साथ एक भावना रही जो कि बहुत ही अलग थी। जिसे बता पाना थोडा कठिन था, अथात् मुझे समझ नही आया कि मै शुरू कहा से करु। अगर लिखने बैठु तो क्या लिखू एक अजीब सी जंग मेरे जहन मे चलने लगी। जब, मै लिख कर बैठी तो दिमाग में एक प्रसन्न आया कि, "कया मित्रो गलत थी, या वह बस थोड़ी अलग थी"। इसलिए सब उसे बेबाक और अलहड बोलते थे। फिर दिमाग में आया कि नही वो बस एक एसी जगह से आई थी जहां लाज शर्म नाम की कोई चिज ही नहीं थी। और उसके ससुराल वाले सभी शरीफ लोग थे, और सायद उनकी सोच थोडी रुडीवादी थी फिर सोचा नही सायद मित्रो की सोच थोडी खुली हो। तब, फिर जाकर लगा, कि मित्रो की जगह अगर कोई ओर होता तो सायद उसका वयवहार भी एसा ही होता। कयोकि सायद एक समय के बाद सबकी अपनी अपनी कोई सारिरक इचछाए होती है। जिनको वो पूरा करना चाहते होंगे और जब वह इचछाए पूंण नही हो पाती तब वह या तो चिडचिडेपन मे बदल जाती हैं या फिर चुपी मे।

और अगर मित्रो के दृष्टिकोण से देखी जाए तो अपने मन की बाते बताने मे कोई बुराई नहीं, बल्कि उसके अनुसार हमें जैसा भी महसूस हो वह हमें व्यस्त कर देना चाहिए। अगर मैं उसके दृष्टिकोण से उपन्यास देखती हूं, तो मुझे लगता है, जैसे ही मित्रो ने प्रतिक्रिया व्यक्त की है, उसी तरह मैं भी प्रतिक्रिया देती।

यहा पर, क्योंकि मित्रो बहुत खुली हुई हैं और किसी चिज को बोलने से पहले नही सोचती तो सायद इसलिए वह कडवे शब्द बोलती है। और इसलिए सायद उसे बेबाक और अलहड कहा गया है। और इसी के साथ साथ एक ओर चिज जो मेरे जहन मे रही वो ये थी कि मित्रो को बेसक बोलने की तमीज नही थी लेकिन उसे बडे छोटे और सही गलत का पता था। सायद इसिलिए वो अपनी जेठानी की इजजत करती थी। और जब फूला ने सुहाग से अपने जैवर मागे तब मित्रो ने उसे ताना मारा कयोकि वह अपनी जेठानी की बहुत इजजत करती थी।

और मेरे हिसाब से उपनयास मे गुलजारी का चरित्र छुपा ही रहा कि वो कया सोचता है कया करता है। जिसके कारण मुझे लगा कि उसका चरित्र थोड़ा और दिखाना चाहिए था। उसे थोड़े ओर ढंग से समझाना चाहिए था। कयोकि मुझे उसके चरित्र के बारे मे जाना था। जोकि बहुत कम बताया गया था।

ग्रन्थसूची:

1. https://www.healthline.com ›स्वास्थ्य वेब परिणाम सेल्फ-कॉन्शियस इमोशंस: डेफिनिशन, कारण और लाभ – हेल्थलाइन
2. https://www.ncbi.nlm.nih.gov ›pmc वेब परिणाम नैतिक भावनाओं और नैतिक व्यवहार – NCBI
3. https://www.scribbr.com ›qualitativ ... गुणात्मक अनुसंधान क्या है? | दृष्टिकोण, तरीके और उदाहरण
4. https://mason.gmu.edu ›htmlPDF अध्याय 9: पाठ्य विश्लेषण
5. https://journals.sagepub.com/doi/pdf/10.1177/0002764295038008006